॥ ३ ॥ महामुनि दुर्वाससं दृक्षा ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ मध्यादित्यगते मध्यगतादित्ये ॥ ७ ॥ प्रयहः ऊर्ध्वबाहुः ॥ ८ ॥ किंप्रमाणेनमसुत्रपर्यतं ततोप्यधिकंवा ॥ ९ ॥ १०॥ ॥ १० ॥ १० ॥ प्रवंशमस्यशापवशाद्दुः त्वोपेतं चिरायुष्यंवकुंपीढिकामाह ॥ शृणुराजन्तिति ॥ पुरा पूर्वस्मिन्काले भृगुपत्नीं स्वपुरोहितमातरं ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ अवध्यां तमाश्रमंमहातेजाःपितातेसुमहायशाः॥ पुरोहितंमहामानंदिहसुरगमत्सवयं॥ ३॥ सहस्रासूर्यसंकाशंज्वलंतिमवतेजसा॥ उपवि
छंवसिष्ठस्यसव्यपार्श्वेमहामुनि॥ ४॥ तोमुनीतापसश्रेष्ठोविनीतावभ्यवादयत्॥ सताभ्यांपूजितोराजास्वागतेनासनेनच॥ ४॥पा
चेनफलमूलेश्वउवासमुनिभिःसह॥ ६॥ तेषांत्रेपोपिवछानांतास्ताःसुमधुराःकथाः॥ वभूवुःपरमर्षीणांमध्यादित्यगतेहिन॥ ७॥ त
तःकथायांकस्यांचित्यांजलिःप्रग्रहोत्त्यः॥ उवाचतंमहात्मानमन्नेःपुत्रंतपोधनं॥ ८॥ भगवन्किप्रमाणेतममवंशोभविष्यति॥ कि
मायुश्विहमेरामःपुत्राश्वान्येकिमायुषः॥ ९॥ रामस्यचसुतायेस्युक्तेषामायुःकियद्भवेत्॥ काम्ययाभगवन्त्रहिवंशस्यास्यगतिमम्
॥ १०॥तच्छुत्वाच्याहतंवाक्यंराज्ञोदशरथस्यतु॥ दुर्वासाःसुमहातेजाव्याहर्तुसुपचकमे॥ १०॥ श्रण्णुराजन्युरावतंतददेवासुरेयुि॥
देत्याःसुरैर्भत्स्यमानाधगुपत्नोसमाश्रिताः॥ तयादत्ताभयास्त्रन्यवसन्नभयास्त्रा। १०॥ त्वापिरगृहीतांस्तान्दस्त्रकृदःसुरेश्वरः॥
चक्रेणशितधारेणभ्रगुपत्नाःशिरोहरत्॥ १॥ ततस्तांनिहतांदस्त्रापत्नीभ्रगुकुलोहहः॥शशापसहसाकुदोविष्णुंरिपुकुलाईनं॥ १८॥
यस्मादवध्यांमेपत्नीमवधीःकोपमूर्च्छितः॥ तस्मात्त्वंमानुषेलोकजिनिष्यस्त्रिज्ञावावविष्यात्राव्यविष्यात्रविष्यस्त्रात्वविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्तेष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्वविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्रविष्यात्र षिक॥शापाभहतचतास्तुस्वात्मनामा।वतामवत्॥ १५॥ ज्ञानाहात्राचानात्राचानात्राचानात्राचानात्राचानात्राचानात्राचानात्र नुपहायपटत्तर्दश्वरः स्वोपास्योमयास्यभिमानेनशप्तः॥ ईश्वरत्वाद्यदितंनिरस्येत्तदामिध्यावचनत्वेन नरकप्राप्तिःस्यादितिपश्चात्तापंपरीतचित्तः॥ स्वात्मनांतर्यामिणाभा वितः स्वशापस्वीकारार्थमी श्वरंप्रति तपश्चरणार्थपे रितइत्पर्थः ॥ १६॥